प्रेरक प्रसङ्ग

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली 1992 ई॰मे एक गोट मैथिली-अङरेजी शब्दकोश प्रकाशित करबाक नेआर कएलक। से जानि हम तदर्थ एक विस्तृत योजना बनाए विचारार्थ अकादेमीकेँ देल। दुर्भाग्यवश अकादेमीक ओ नेआर स्थगित भए गेल। तथापि हम *प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति* एहि सुभाषितकेँ स्मरण कए शुद्ध मातृभाषाऽनुरागवश ओहि योजनाकेँ पूरा करबामे लागि पड़लहुँ। लगभग तीन वर्ष निरन्तर लागल रहलापर उक्त मैथिली-अङरेजी शब्दकोशक प्रारूपण सम्पन्न भेल। तखन चिन्ता भेल जे एकर उपयुक्त प्रकाशक कतए भेटत। एहि कठिन समस्याक समाधान सोझ नहि छल। हारिकेँ पाण्डुलिपिकेँ बान्हि-छेकि तत्काल झप्पामे राखि देल।

किछु दिनक बाद संयोगवश एक विद्वान् मित्र श्री हेतुकर झासँ भेट भेल। हुनकासँ ज्ञात भेल जे दरभङ्गाक महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेशन एक ग्रन्थमालाक प्रकाशन आरम्भ कएलक अछि जकर नाम थिकैक *कामेश्वर सिंह बिहार हेरिटेज सीरीज।* हम अपन कोशक पाण्डुलिपि उक्त फाउण्डेशनकेँ समर्पित करैत अनुरोध कएल जे हमर ई कोश उक्त फाउण्डेशनक प्रतिष्ठा तथा ओकर परमोदार सम्पोषकक गरिमाकेँ ध्यानमे रखैत प्रकाशित कएल जाए।

उक्त फाउण्डेशनक न्यासीलोकनि हमर अनुरोध स्वीकार कएल आ पाण्डुलिपिकेँ आओर परिष्कृत करबामे हमर सहायतार्थ प्रख्यात विद्वान्लोकनिक एक परामर्शक-मण्डल गठित कए देल। तदनुसार एहिमे बहुतो रास नब-नब शब्द ओ नब-नब अर्थ चढ़ाओल गेल, शब्दक व्याख्या, जे केवल अङरेजीमे छल, मैथिलीमे सेहो जोड़ल गेल तथा बहुत रास आनो प्रकारक परिष्कार कएल गेल।

एहि प्रकारेँ प्रस्तुत एहि शब्दकोशक हेतु अनेक नाम सुझाओल गेल। ताहिमे हमरालोकनि निर्धारित कएल *कल्याणी-कोश : मैथिली-अङरेजी शब्दकोश*। शब्दकोशक नाम ओहिसँ सम्बद्ध कोनो उज्ज्वल ऐतिहासिक व्यक्तिक नामपर राखल जाएब कोनो नब परिपाटी नहि थिक। एकर उत्तम उदाहरण अछि असमिआ भाषाक प्रख्यात शब्दकोश *चन्द्रकान्त अभिधान।* महारानी कल्याणी खण्डवला-राजवंशक अन्तिम जीवन्त ज्योति थिकीह, तेँ एहि नाममे एकटा विशेष ऐतिहासिक अभिव्यञ्जना निहित छैक। तहिना एहि शब्दकोशक प्रकाशन सेहो निश्चय एक ऐतिहासिक घटना थिक। आशा अछि जे एहि कोशक नाममे कल्याणी शब्दक संयोजनकेँ ओलोकनि अवश्य सराहताह जे हमरासभक संस्कृतिक संरक्षणमे इतिहासक महत्त्व बुझैत छथि।

एहि शब्दकोशक सङ्कलन-सम्पादनमे जे-जे महानुभाव हमर मार्ग-दर्शन ओ सहायता कएलनि अछि तनिकालोकनिक प्रति हार्दिक कृतज्ञता-ज्ञापन करैत छी। एहिमे विशेष रूपेँ उल्लेखनीय छथि प्रो॰ भीमनाथ झा ओ श्री मोहन भारद्वाज, जे बहुतो नव-नव शब्द ताकि-ताकि दैत रहलाह, पं॰ मतिनाथ मिश्र 'मतङ्ग' जे स्वसङ्कलित *मैथिली-शब्द-कल्पद्रुम* प्रकाशित होएबासँ पूर्वहि बेर पर उपलब्ध करओलनि, आओर डॉ॰ डोमन साहु 'समीर' जनिक प्रसादेँ बहुत-रास पूर्वाञ्चलीय शब्द उपलब्ध भेल।

हम विशेष ऋणी छी बिहार सरकारक भूतपूर्व लोक-शिक्षा-निदेशक प्रो॰ दामोदर ठाकुरक, जे एहि कार्यमे निरन्तर मार्गदर्शन ओ सहयोग करैत रहलाह।

आ अन्तमे धन्यवाद दैत छिअनि फाउण्डेशनक प्रबन्ध-न्यासी सुधी-सुहृद् डॉ॰ हेतुकर झाकेँ जे एहि शब्द-कोशक संकलन, सम्पादन आ मुद्रणक क्रममे सहायतार्थ सतत उपलब्ध रहलाह, हमर शङ्का सभक निराकरण करैत रहलाह तथा हमर अनेक स्खलन आ त्रुटिक परिमार्जन करैत रहलाह। ई हिनके बुद्धिमत्ता ओ कार्यकुशलताक प्रसाद थिक जे हमर एकटा सपना आइ साकार भए सकल।

—गोविन्द झा

पटना

28 नवम्बर, 1998

7 अग्रहायण, 1920